महाकुम्भ प्रयाग

प्रो. रामनारायण द्विवेदी
राष्ट्रिय महामंत्री, श्रीकाशीविद्वत्परिषद्

प्रयागराज एक अत्यन्त पवित्र नगर है, जिसकी पवित्रता गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम के कारण है। वेद से लेकर पुराण तक और संस्कृत कवियों से लेकर लोकसाहित्य के रचनाकारों तक ने इस संगम की महिमा का गान किया है। भारत के ऐतिहासिक मानचित्र पर प्रयागराज एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिसकी रोशनी कभी भी धूमिल नहीं हो सकती। ऐसा माना जाता है कि चार वेदों की प्राप्ति पश्चात ब्रह्म ने यहीं पर यज्ञ किया था, सो सृष्टि की प्रथम यज्ञ स्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया। प्रयाग माने प्रथम यज्ञ। प्रयागराज को संगमनगरी, कुम्भनगरी और तीर्थराज भी कहा गया है। प्रयागशताध्यायी के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या इत्यादि सप्तपुरियाँ तीर्थराज प्रयाग की पटरानियाँ हैं, जिनमें काशी को प्रधान पटरानी का दर्जा प्राप्त है। गोमुख से प्रयागराज तक जहाँ कहीं भी कोई नदी गंगा से मिली है उस स्थान को प्रयाग कहा गया है, जैसे-देवप्रयाग, कर्ण प्रयाग, रुद्रप्रयाग आदि। केवल उस स्थान पर जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है प्रयागराज कहा गया। इस प्रयागराज के बारे में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-**"को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ, कलुष-पुंज कुंजर मृगराऊ। सकल काम प्रद तीरथराऊ, बेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ।।"** इसी प्रयाग की धरा पर हर 6 वर्ष पर कुम्भ और 12 वर्ष पर महाकुम्भ पर्व का भव्य आयोजन होता है।

कुम्भ पर्व सनातन आस्था का प्रतीक है। शास्त्रों में कुम्भ पर्व की महिमा का गुण-गान करते हुए स्नान को समस्त पापों का नाशक एवं अनंत पुण्यदायक बताया गया है। स्कंद पुराण में वर्णित है-

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भस्नानेन तत्फलम् ।।

अर्थात एक हजार बार कार्तिक मास में गंगा में स्नान करने से, सौ बार माघ में संगम-स्नान करने से, वैशाख में एक करोड़ बार नर्मदा-स्नान करने से जो पुण्यफल अर्जित होता है, वह कुम्भ में केवल एक बार स्नान करने से प्राप्त होता है। विष्णु पुराण में भी कुम्भ-स्नान की प्रशंसा में कहा गया है-

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
लक्ष प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम ।।

अर्थात् हजार बार अश्वमेध यज्ञ करने से, सौ बार वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जितनी पुण्यराशि संचित होती है, उतनी कुम्भ में एक बार स्नान करने से प्राप्त होती है।

कुम्भ पर्व हरिद्वार (गंगा तट), उज्जैन (क्षिप्रा तट) तथा नासिक (गोदावरी तट) में भी लगता है परन्तु प्रयाग कुम्भ की महत्ता इसलिए भी बढ़ जाती है कि लोगों को यहाँ तीन पवित्र नदियों के संगम में स्नान करने का सुअवसर प्राप्त होता है। प्रयाग में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर प्रत्येक बारह वर्ष के अन्तराल पर यह विश्व प्रसिद्ध पर्व मकर संक्राति से लेकर महाशिवरात्रि तक चलता है, जिसमें देश-विदेश से करोड़ों नर-नारी असीम श्रद्धा के साथ पतित-पावनी त्रिवेणी में स्नान कर न केवल अपने पापों एवं कष्टों को धोते हैं, बल्कि ऐसी मान्यता है कि इसके साथ ही विद्वानों के मुखारबिन्द से अविरल बह रही गंगा में गोता लगाकर अपने जन्म-जन्मान्तर के पापों को भी नष्ट करते हैं। कुम्भ की भव्यता और मनमोहकता से आकृष्ट हो हजारों विदेशी पर्यटक इस अवसर पर विशेष रूप से आते हैं और कई तो सदा-सदा के लिए यहाँ की आध्यात्मिक रजकणों से अभिभूत हो अपनी भौतिक सम्पन्नता को त्याग कर भक्ति में लीन हो जाते हैं।

भारतीय संस्कृति में गंगा नदी का प्रमुख स्थान है, जिसके तट पर प्रयाग में कुम्भ का आयोजन होता है। वस्तुतः गंगा एक जीवन धारा है। ज्ञान वैराग्य और भक्ति का अमृत संगम में छिपा है जिसमें डुबकी लगाने से इंसान को जीते जी मोक्ष की प्राप्ति होती है। तभी तो कहा गया है- **"गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः ।"** कुम्भ-पर्व का वेदों में उल्लेख मिलने से इसकी प्राचीनता का पता चलता है। **ऋग्वेद (10-89-7). शुक्लयजुर्वेद (19-87), अथर्ववेद (4-34-7, 16-6-8 एवं 19-53-3)** की ऋचाएँ कुम्भ पर्व पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं। प्रयाग में संगम की रेती पर लगने वाला कुम्भ मेला अनेक मायनों में अद्भुत और अतुलनीय है। इस पर बसने वाली तंबुओं की नगरी में देश और दुनिया से अनेक मत-मतांतर, भाषा-भाषी, रीति-रिवाज, संस्कार प्रथा-परंपरा के श्रद्धालु पुण्य और मोक्ष की कामना से जुटते और संगम में डुबकी लगाते हैं। कुम्भ पर्व अमृत स्नान और अमृतपान की कामना की बेला है। इस समय गंगा की धारा में अमृत का सतत् प्रवाह होता है।

कुम्भ पर्व की मूल चेतना पुराणों में वर्णित है। कथा यह है कि, ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण जब देवताओं ने अपनी शक्ति खो दी, तब असुरों ने उन पर हमला कर दिया। देवता पराजित हो, अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा और आदिदेव शिव की शरण में गए। शिव ने समाधान के लिए भगवान विष्णु के शरण में जाने की सलाह दी। तब भगवान विष्णु ने क्षीरसागर का मंथन कर अमृत निकालने का उपाय सुझाया। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर संपूर्ण देवतागण, दैत्यों के साथ संधि करके क्षीरसागर के मंथन की योजना में जुट गए। मथना था समुद्र (क्षीरसागर) तो मथनी और नेति (रस्सी) भी उसी हिसाब की चाहिए थी। ऐसे में मंदराचल (मंदर) पर्वत मथनी बना और नाग वासुकी नेति। समुद्र मंथन से कुल चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई। जिन्हें देव और असुरों ने परस्पर बाँट लिया। परन्तु जब भगवान धन्वन्तरि ने अमृत कलश देवताओं को दे दिया तो फिर भीषण युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। समाधान के लिए तब भगवान विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौपा। अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहा था। तब दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयंत का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयंत को पकड़ लिया। तत्पश्चात, अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध चलता रहा। पुराणों में इसे देवासुर संग्राम कहा गया। युद्ध के इसी क्रम में अमृत की बूँदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरीं- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज। चूँकि, विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुम्भ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुम्भ पर्व के द्योतक बन गये। इस प्रकार ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुम्भ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया। एक अन्य कथा के अनुसार, चूँकि जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है। यही कारण है कि कालान्तर में ऊपर वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुम्भ का आयोजन होता है। तीसरी कथा के अनुसार, अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुम्भ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं। जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है। इसलिए मनुष्य योनि के लिए ये चार कुम्भ बेहद महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जिस समय में चंद्र आदि ग्रहों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं। उस समय कुम्भ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुम्भ के पर्व का आयोजन होता है।

बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। विष्णु याग के अनुसार-

माघे मेषगते जीवे, मकरे चन्द्रीभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भख्यस्तीर्थ नायके ।।

अर्थात् माघ में वृहस्पति के मेष में होने तथा सूर्य और चन्द्रमा के मकर में होने पर अमावस्या को प्रयाग में कुम्भ पर्व होता है। धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को पुनः तत्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है। जिससे कुम्भ की उपयोगिता स्वयं सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्व में सामंजस्य एवं सन्तुलन स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करने का उपक्रम भी है। प्रकृति ही जीवन व मृत्यु का आधार है। ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है **"यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे"** अर्थात जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इस लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे। उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है कुम्भ, और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का महाप्रसाद है।

मकर संक्रान्ति से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक चलने वाले प्रयाग कुम्भ पर्व में कुछ खास स्नान पर्व होते हैं और तीन शाही स्नान पर्व होते हैं- मकर संक्राति (प्रथम शाही स्नान), पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या (द्वितीय शाही स्नान), वसंत पंचमी (तृतीय शाही स्नान), माघ पूर्णिमा, महाशिवरात्रि । कुम्भ सिर्फ मानवीय आयोजन नहीं बल्कि एक दैवीय और आध्यात्मिक महोत्सव है। मीलों लंबे चौड़े क्षेत्र में कुम्भ पर्व के दौरान जो वातावरण व्याप्त रहता है, वह महीनों और वर्षों में ढले स्वभाव को भी सहज ही बदलने में समर्थ है। कुम्भ ऐसा पर्व है जहाँ मानव का देव से सीधे साक्षात्कार होता है, शारीरिक-मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिलती है। ग्रह-नक्षत्रों के सहयोग तथा गंगा और संतों पर उमड़ने वाली आस्था कुम्भ रूपी सृष्टि जीवनदायी अमृत का बोध कराती है।

प्रो. रामनारायण द्विवेदी
राष्ट्रिय महामंत्री, श्रीकाशीविद्वत्परिषद्